वर्तमान भौतिकवादी युग में सामाजिक नैतिकता का अर्थ एवं इसकी उपयोगिता

ममता कुमारी*
डॉ0 गौतम कुमार सिन्हा *

साधारण भाषा में यह कहा जा सकता है कि परिवार, समाज व समूह के नैतिक नियमों का अनुपालन करना ही नैतिकता है। नैतिकता के अंतर्गत समाज द्वारा निर्धारित व्यवहार और आदर्श आते हैं। हमारे सभी प्रकार के कार्य आचरण और व्यवहार का संबंध नैतिकता से ही होता है। अतः नैतिकता का सामान्य अर्थ या अभिप्राय सामाजिक समूह के द्वारा बनाये गये नैतिक नियमों को स्वीकार करने से और पालन करने से है जो हमें परम्पराओं से प्राप्त होते रहता है। नीति–शास्त्र को नैतिकता का शास्त्र भी कहा जाता है। अतः यह हमें उचित, अनुचित, अच्छा बुरा तथा हमें क्या करना चाहिए क्या नहीं करना चाहिए, इस ज्ञान के संदर्भ में उचित आचरण की ओर इंगित करता है। जे.एन सिन्हा ने नीतिशास्त्र के स्वरूप तथा विधि के उपर प्रकाश डालते हुए लिखा है :

अतः हमारे नैतिक कर्म की अनुशंसा परिवार और समाज के द्वारा होना चाहिए। यह किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा बनाये नैतिक नियम नहीं होते हैं बल्कि इसके नियन्ता परम पुरूष, ऋषि मनिषी नीतीशास्त्री आदि होते हैं, अतः इनका पालन करना एक प्रकार की नैतिक बाध्यता होती है। आज की भौतिकता की दौड़ में नैतिकता को हर क्षेत्र में नजर अंदाज कर दिया गया है। समाज के हर वर्ग के लोग नैतिकता की अवहेलना कर रहे हैं।

वस्तुतः नैतिकता की जीवन सर्वोपरि है और नैतिक नियमों का पालन नहीं करने के कारण यह समाज को पतन की ओर बढ़ता चला जा रहा है। नैतिकता का सबसे महत्वपूर्ण पहलु यह है कि हम सही को सही समझे और गलत को गलत। परन्तु अपने स्वार्थ के कारण हम इसे नजरअंदाज करते हुए किसी भी कीमत पर आगे बढ़ना चाहते हैं।

***Research Scholar, P.G. Dept of Philosophy, Magadh University, Bodh-Gaya.**
***Professor & Head, P.G. Dept of Philosophy, Magadh University, Bodh-Gaya.**

गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा है– "भय का अभाव, अंतःकरण का निर्मलता, सरलता, अहिंसा, सत्य, त्याग, दोष दृष्टि का अभाव" ये सारे नैतिक पुरूष के लक्षण हैं। Swami Prabhupada ने इस सन्दर्भ में लिखा है :

"Fearlessness, peacefulness, self-control, austerity, purity, tolerance, honesty, knowledge, wisdom and religiousness-these are the natural ethical qualities by which a moral man works"[2]

परन्तु हम पाते हैं कि शास्त्र, सिद्धांत, उपदेश, प्रवचन, साहित्य, अनुशासन ये सभी जीवन का दर्शन या जीवन जीने की कला का वर्णन तो कर सकते हैं पर आचरण नहीं। नैतिकता तो आचरण है, प्रज्ञा है, शील है जिसे सिर्फ स्वयं जीया जा सकता है। समाज को यदि बचाना है तो हमें नैतिकता को जीवन का हिस्सा के रूप मे ंस्वीकारना होगा। नैतिकता किसी तरह का मुखौटा नहीं या प्रदर्शन और किसी प्रकार की प्रतिक्रिया भी नहीं है, यह तो जीवन जीने की अभिव्यक्ति होनी चाहिए और प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में नैतिक आचरण को उतारना चाहिए तभी हम एक स्वस्थ तथा नैतिक समाज का निर्माण कर सकते हैं। वस्तुतः हमारे नीतिशास्त्रियों, संत मनीषियों ने जिस स्वर्ग और नरक की कल्पना की थी वह किसी और लोक में नहीं बल्कि मनुष्य के जीवन में ही विद्यमान होता है। नैतिक गुणों से युक्त हर इंसान का जीवन सुख–शांति और संतोष का भंडार होता है। उत्कृष्ट और सादगी भरे विचारों और सच्चे धर्म का प्रतीक है नैतिक जीवन। जब हम अनैतिक होंगे तो हमारा जीवन भी नारकीय होगा, जिसमें तनाव का बोझ होगा, चिंताओं से भरा हुआ होगा और हम हमेशा दुर्गुणों तथ दुराचारों की आग में जलते रहेंगे। अतः नैतिक बनने का अर्थ है एक उन्नत सुख–शांति संपन्न समाज, जो इस आधुनिक तथा भौतिक युग की अनिवार्यता है। सामाजिक नैतिकता का अर्थ है। कि हम सभी कदम–दर–कदम नैतिकता के पदचिन्हों पर चलें, और हमारा यही कदम जीवनशक्ति तथा आत्मशक्ति को उन्नत बना सकता है। चूंकि प्रत्येक मनुष्य के अन्दर ही नैतिकता की अनंत शक्ति है, अतः नैतिक–जीवन जीना ही सही अर्थो में परम पुरूषार्थ है और नैतिकता का प्रकाश ही स्वयं में सबसे बड़ा सत्य है। पुनः हम शोध के पश्चात् यह भी पाते हैं कि आदिकाल मे ंया एक समय पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा को वरीयता मिलती थी। नैतिक शिक्षा की पुस्तकों से प्रेरक प्रसंगों के माध्यम से यह सिखाया जाता था कि हमें अपने जीवन में किन नैतिक गुणों या आदर्शो को आत्मसात करना है। इन नैतिक गुणों मे ंसत्य, ईमानदारी, सहनशीलता, विनम्रता, संवेदनशीलता, गुरू–सेवा, माता–पिता का आदर, मित्रता, दया और दान जैसे नैतिक मूल्य होते थे। समय बीतने के साथ–साथ वर्तमान

भौतिकवादी युग में नैतिक शिक्षा अनिवार्य शिक्षा पाठ्यक्रम से बाहर हो गई। अब न तो विद्यालयों में नैतिक शिक्षा दी जा रही है और न ही अभिभावकों के पास उसके लिए समय है कि वे बच्चों को संस्कार दे सकें। वे भौतिक सुख तथा अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पुर्ति में ही व्यस्त रहते हैं। इस प्रकार धीरे–धीरे नैतिकता सामाजिक परिदृष्य से गायब होते चली जा रही है। और यह अटुट सत्य है कि बिना नैतिक शिक्षा के एक अच्छे व्यक्ति की कल्पना कैसे की जा सकती है, और कैसे एक स्वस्थ तथा सुखद समाज का निर्माण हो सकता है। एक ओर नैतिक शिक्षा का अभाव हो रहा है तो दुसरी ओर इंटरनेट मीडिया का बुरी तरह से आज के युवाओं के द्वारा दुरूपयोग हो रहा है। पहले संयुक्त परिवार में बुजुर्ग अपनी अगली पीढ़ी को कहानियों के माध्यम से अच्छी बातें सिखाते थे। परन्तु आज के आधुनिक सोच ने एकल परिवार को ही मान्यता देना शुरू कर दिया है और इस कारण बड़े–बुजुर्गो की परिवार में कोई जगह नही रह गई है।

वास्तव में नैतिक शिक्षा ही नैतिक मूल्यों को प्रवर्तित करती है और अंततः ये नैतिक मूल्य ही सामाजिक नैतिकता के स्तंभ होते हैं। नैतिक मूल्यों को जब एक व्यक्ति अपने जीवन में अपनाता, उतारता है तभी एक व्यक्ति चरित्रवान बनता है। सदाचार ही व्यक्ति को एक संपुर्ण मनुष्य बनाता है और यही देवत्व या अध्यात्म की ओर ले जाता है। जीवन के समस्त गुणों, ऐश्वर्यो, समृद्धियों और वैभवों की आधारशिला सदाचार है, सच्चरित्रता है। यदि हम सदाचारी है, सच्चरित्र है, तो संसार की समस्त विभूतियाँ, बल, बुद्धि, वैभव की प्राप्ति हमें होने लगती है और यदि हमारा जीवन दुश्चरित्रता और दुराचारी का घर होता है तो हम समाज में निन्दा और तिरस्कार के पात्र बन जाते हैं। अपने बल, बुद्धि और वैभव को हम अपने ही हाथो से खो बैठते हैं। दुश्चरित्र अपने परिवार और समाज के लिए अभिशाप सिद्ध होता जबकि सच्चरित्र के लिए स्वर्ग के द्वार सदैव खुले रहते हैं। दुश्चरित्र मनुष्य अपने कुकर्मों और कुकृत्यों से नारकीय जीवन की सृष्टि करता है, जबकि सच्चरित्र ज्ञान के प्रकाश के उज्जवल वातावरण में विचरण करता है। वैदिक मंत्रों में हमारे ऋषियों ने इसलिए भगवान से प्रार्थना की है कि–

"असतो मों सद्गमय, तमसो मां ज्योतिर्गमय मृत्योंमा अमृतं गमय।"

अर्थात् हे ईश्वर, मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो, अन्धकार से मुझे प्रकाश की ओर ले चलो। अतः निर्षकषतः हम कह सकते हैं कि नैतिकता और सच्चरित्रता सामाजिक नैतिकता की आधारशिला है। नैतिकता या सच्चरित्रता किसी विशेष गुण का बोधक या शर्त नहीं है, बल्कि अनेक गुण जैसे– सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, उदारता, विशिष्टता, विनम्रता, सहनशीलता, ईमानदारी, सुशीलता, सहानुभूतिपरता आदि गुण जिस व्यक्ति में होते हैं, वह व्यक्ति ही नैतिक

और सच्चरित्र कहलाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि नैतिकता से अभिप्राय सामाजिक समूह के नैतिक नियमों को स्वीकार करने और पालन से हैं। नैतिकता सामाजिक नियंत्रण का साधन है। समाज–सम्मत व्यवहार तथा आदर्शो का सम्मिलत रूप ही नैतिकता का स्वरूप धारण करता है। समाज के आदर्शो के प्रति स्वेच्छा से आचरण करना ही सामाजिक नैतिकता का उदाहरण हो सकता है। अतः समाज में रहकर सिर्फ विभिन्न प्रकार के कर्म सम्पादित करना ही एक मनुष्य का लक्ष्य नहीं होना चाहिए बल्कि हमारे सभी कर्म सद्गुण या नैतिकता के साथ सम्पन्न होना चाहिए तभी वह कर्म सामाजिक नैतिकता का मानदंड बन सकता है। इस संदर्भ में J.N. Sinha ने लिखा है :

"It is our duty to avoid what is wrong. if we habitually perform our duties, we acquire virtue. If we habitually commit wrong actions, we acquire vice. virtue is the excellence of character. vice is the taint of character. Duties refer to external actions. Virtues refer to the inner character. Duties refer to particular actions. Virtues refer to the permanent acquired dispositions or character."[3]

Reference :

1. J.N. Sinha," A Manual of Ethics", p.1.
2. Swami Prabhupada, " BhagvadGita As it is" P. 730.
3. J.N. Sinha, " A Manual of Ethics, P. 38, 39.

Bibliography.

1. Vivekananda, Swami, "What Religion is?, Ed. John yaleInt. By C.Isherwood, Advaita Ashram. 1962.
2. Sharma, D.S., " The Master and the Disciple". Madras. Sri Ram Krishna Math. 1947.
3. Datta, D.M., "The Political Philosophy of Mahatma Gandhi", Ahmedabad, Navajiwan Publishing House.
4. Gandhi, M.K., "The Art of Living", Bombay, Bhartiya Vidya Bhawan. 1961.
5. Aurobindo, Sri, "The Life Divine", Pondicherry" 1955.